# निराला के उपन्यासों में अभिव्यक्त जनवादी चेतना

* प्रिया सिंह

निराला आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक क्रान्तिकारी कवि एवं मूर्धन्य साहित्यकार हैं। उन्होंने जर्जरित रूढ़ियों को तोड़कर स्वस्थ समाज के निर्माण को एक नयी दिशा दी है। जहाँ एक ओर निराला ने हिन्दी साहित्य को भाषा संवेदना दी है, वहीं दूसरी ओर प्रगतिशील साहित्य चेतना का संबल भी प्रदान किया हैं उनकी रचनाओं में सामाजिक विद्रूपता के प्रति आक्रोश का स्वर है तो वहीं ओज की प्रधानता भी है। इन्होंने जीवन के कटु यथार्थ को भोगा है, सामान्य जन जीवन की पीड़ा को बहुत करीब से देखा है और सामाजिक विषमताओं के विष को स्वयं पीकर नीलकंठ के समान जनचेतना को व्यापक आयाम दिया है। निराला की जनचेतना आवेग नहीं गहरी अनुभूति है, वह कवि कल्पना मात्र की उपज ही नहीं है वरन् उसमें मानवीय संवेदना की सुधा समाहित है।

जन चेतना निराला साहित्य की मूल संवेदन है। **'कुकुरमुत्ता'**, **'वह तोड़ती पत्थर'**, **'भिक्षुक'** आदि कविताओं में सामान्य जन–जीवन की पीड़ा मुखरित हो उठी है। इन पंक्तियों में यह पीड़ा छिपी हुई है–

**"चाट रे वे झूठे पत्तल, कभी सड़क पर खड़े हुए।**
**और झपट लेने को उनसे, कुत्ते भी हैं अड़े हुए।।"**

इसी यथार्थबोध की गइराई से प्रगतिवाद की धारा फूँटती हैं। निराला इस काव्यधारा के सशक्त कवि हैं, उसके पुरोधा एवं जीवन्त साहित्यकार हैं। जो वेदना, पीड़ा और दर्द निराला के साहित्य में मिलता है, उसका तथ्यपरक गहन अनुशीलन पूरी तरह से नहीं हो पाया है, जो हुआ वह उनकी काव्य कृतियों और कविताओं तक ही सीमित है। अभी तक हमने निराला जी को एक विप्लवकारी कवि की ही अभिधा दी है, किन्तु अब हमें यह भी देखना होगा कि उपन्यासों, कहानियों, निबन्धों आदि के अपूर्व स्रष्टा एवं असामान्य गद्य–शिल्पी के रूप में भी निराला की महत्ता सम्माननीय है, विशेषकर उपन्यासकार के रूप में। औपन्यासिक सृजन एक निरन्तर प्रक्रिया है जिसमें रचनाकार के लिए उसकी सृजन पीड़ा की अनिवार्यता होती है, जिसमें भविष्य के स्त्रोत फूटते हैं। रचनाकार के सृजन में समग्रता का सत्य अनुप्राणित होता है, इसलिए वह अपनी रचना में अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक अटूट श्रृंखला के रूप में प्रस्तुत करता है।

निराला ने पूरे–अधूरे सब मिलकार नौ उपन्यास लिखे हैं। इन नौ उपन्यासों में उन्होंने एकाधिक भावभूमियाँ ग्रहण की हैं और अपने काव्य–विकास की भाँति ही उपन्यासों में भी वे आद्यंत एकरस नहीं हो पाएं हैं। 1935 के पूर्व के उपन्यासों में स्वच्छंदतावादी दृष्टिकोण की प्रधानता है, **'अप्सरा'**, **'अलका'**, **'निरूपमा'**, और **'प्रभावती'** इनके स्वच्छंदतावादी उपन्यास हैं। यदि छायावाद को केवल काव्य से ही सम्बद्ध न माना जाये तो इन उपन्यासों को हम छायावादी उपन्यास भी कह सकते हैं। इनके उपन्यासों की दूसरी कोटि यथार्थवादी उपन्यासों की है। इनमें **'कुल्ली भाट'** और **'बिल्लेसुर बकरिहा'** विशेष महत्वपूर्ण हैं। **'चमेली'**, **'चोटी की पकड़'** और **'काले**

* शोध छात्रा (हिन्दी विभाग), डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

**कारनामे'** इसी कोटि के अन्य उपन्यास हैं, किन्तु ये तीनों उपन्यास पूरे नहीं हो पाए। निराला ने जिन वैचारिक बिन्दुओं को दृष्टिपथ में रखकर औपन्यासिक रचनाएँ लिखी वे सभी सामाजिक समस्याओं से जुड़ी हुई थीं। निराला के उपन्यासों में समाज की बदली प्रकृति और युगीन चिन्ताओं का परिदृश्य उभरा हुआ देखने को मिलता है। **'अलका'**, **'अप्सरा'**, **'निरूपमा'** और **'प्रभावती'** इनके नायिका प्रधान उपन्यास हैं। **'प्रभावती'** के अतिरिक्त अन्य तीनों उपन्यासों में मुख्यतः नायिका की असहाय, विडम्बनापूर्ण स्थिति और उसका निराकरण तथा बीच–बीच में ग्राम सुधार की चर्चा और नायक के देश भक्तिपूर्ण क्रियाकलापों के आधार पर कथानक गढ़े गए हैं। इनमें नायिकाओं को केन्द्र में रखकर निराला उनके भीतर स्वावलम्बन का भाव पैदा करते हैं। **'कुल्ली भाट'** में तीखा व्यंग्य है तथा इसके माध्यम से समाज के मुखौटाधारी कर्णधारों, नेताओं तथा समाज सुधारकों पर गहरी मार निराला ने की है। जहाँ **'कुल्ली भाट'** समाज की उच्चाभिमानी मनोवृत्तियों पर तीक्ष्ण व्यंग्य है तो वहीं **'बिल्लेसुर बकरिहा'** में निराला ने हमारे समाज में लक्ष्मीपुत्रों को सम्भ्रान्त समझे जाने की भावना पर खुलकर प्रहार किया है।

छायावादी उपन्यासों में निराला ने शहरों से सम्बद्ध कथा रखी है जबकि यथार्थवादी उपन्यासों में गाँव की कथा कही गयी है। ग्रामीणों के सम्बन्ध में निराला का दृष्टिकोण यथार्थवादी है। वे **"अहा! ग्राम्य जीवन भी क्या है"** वाली अनुदृष्टि के समर्थक नहीं है। ये अपने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की विभिन्न विषमताओं का चित्रण यथार्थवादी शैली में करते हैं। निराला ने जिस ग्रामीण समाज के चित्रण का बीड़ा उठाया है वह अत्यंत स्वार्थी, कुत्सित एवं लांछित है। वस्तुतः निराला जिन सामाजिक सरोकारों से मन में उद्वेलित अनुभव कर रहे थे और काव्य के क्षेत्र में जिनका समाधान प्रस्तुत कर सकना कठिन लग रहा था, उन्हें निराला ने अपनी औपन्यासिक रचनाओं में स्वर दिया है। इनके उपन्यासों में राष्ट्रीय और क्रान्तिकारी भावना, देश प्रेम, नारी समस्याओं, जन साधारण का दुख दर्द, सामंती रूढ़ियों के प्रति विद्रोह, वर्ग चेतना, जनवादी चेतना से ओत–प्रोत नवशिक्षित तरूण–तरूणियों की परिवर्तित मानसिकता, सर्वहारा संस्कृति की प्रतिष्ठा, पूँजीवाद का विरोध आदि विभिन्न सामाजिक सरोकारों के माध्यम से जनवादी चेतना का व्यापक स्वरूप दिखाई देता है।

निराला का पहला उपन्यास **'अप्सरा'** वैश्या समस्या पर आधारित है। इसमें वैश्या पुत्री कनक को सर्वगुण सम्पन्न दिखाकर कथाकार यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि वैश्या भी अन्ततः एक नारी होती है तथा वह भी साधारण जीवन व्यतीत कर सकती है। राजकुमार के प्रति कनक का सावित्री भाव से आत्मसमर्पण एवं वैभव विलास त्यागकर कुलवधू की मर्यादा का पालन उसे अत्यंत उच्च धरातल पर प्रतिष्ठित करता है। इस तरह वे एक वैश्या को सामाजिक मर्यादा दिलाकर न केवल सामाजिक क्रान्ति का श्री गणेश करते हैं बल्कि युवकों को भी इस क्षेत्र में आगे आने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यहाँ निराला प्रेमचंद से एक कदम आगे हैं, क्योंकि प्रेमचंद **'सेवासदन'** की स्थापना करके ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं तो निराला उसे कुलवधू बनाकर गरिमामय जीवन व्यतीत करने का अवसर भी देते हैं। निराला अपने उपन्यासों में वैवाहिक समस्या के विविध पहलुओं का विशद् रूप उद्घाटित करते हैं। अनमेल विवाह, विधवा विवाह, बाल–विवाह, अन्तर्जातीय विवाह,

प्रेम विवाह आदि विभिन्न समस्याओं को उठाकर जहाँ एक ओर इस सम्बन्ध में सामाजिक संकीर्णताओं का पर्दाफाश किया तो दूसरी ओर इन समस्याओं का क्रांतिकारी समाधान भी प्रस्तुत किया है। **'अलका'** उपन्यास में अजीत और वीणा का विवाह करा, निराला उस युग की प्रमुख समस्या विधवा–विवाह का समाधान प्रस्तुत करते हैं। **'प्रभावती'** में प्रेम–विवाह का समर्थन करते हुए वे पृथ्वीराज–संयोगिता के प्रसंग में बहु–विवाह प्रथा का विरोध करते हैं। **'निरूपमा'** उपन्यास में बंगला भाषी निरूपमा और हिन्दी भाषी कुमार को परिणय सूत्र में बांधकर कथाकार ने अन्तर्प्रान्तीय एवं अन्तर्जातीय विवाह की पक्षधरता की है। **'इन्दुलेखा'** में भी वैवाहिक समस्या उठायी गयी है किन्तु अपूर्ण होने के कारण इस समस्या का कोई समाधान यहाँ नहीं हैं।

तत्कालीन भारतीय समाज में नारी की दयनीय स्थिति का अवलोकन भी निराला ने किया है। सामाजिक उपेक्षा की शिकार ऐसी नारियों को अपनी सहानुभूति का संस्पर्श देकर निराला ने नारीत्व के प्रति अपनी अगाध निष्ठा को व्यक्त किया है। **'अप्सरा'** में पुरूष समाज की सामंती विलासिता का शिकार वैश्या के जीवन को कथाकार ने प्रस्तुत किया है। उपन्यास के प्रारम्भ में ही हेमिल्टन साहब का कनक के साथ बलात्कार का प्रयत्न करने की घटना चित्रित है। राजकुमार भी उसके पेशे के कारण उससे घृणा करता है तथा उसे अस्पृश्य मानता है। विजयपुर के राजकुमार के राजतिलक के अवसर पर समाज के तथाकथित सभ्य लोगों की वासना लोलुप दृष्टि की शिकार नारी की विवशता का हृदयद्रावक चित्रण निराला ने किया है। **'अलका'** उपन्यास की नायिका अलका अपनी माता की मृत्यु के पश्चात् अनाथ व बेसहारा हो जाती है, जिसे जिलेदार महोदव प्रसाद झूठी सहानुभूति दिखाकर जमींदार के हाथों बेचने का कुचक्र रचता है, किन्तु किसी तरह वह अपनी रक्षा करती हैं। पंडित स्नेह शंकर के माध्यम से भारतीय नारी की विवशता का चित्र निराला ने किया है– ''इसी भारत में आश्रयहीन बालिका और तरूणि विधवाएँ भी हैं। उन्हें खाने को भी नहीं मिलता, भूख के कारण विधर्म को भी उन्हें ग्रहण करना पड़ता है, चिरसंचित सतीत्व धन से भी हाथ धोती हैं।''[1] **'चोटी की पकड़'** की बाल–विधवा बुआ बलात्कार की शिकार है। इसी कारण उन्हें रानी साहिबा के हाथों अपमानित होना पड़ता है। यहाँ निराला यह भी दिखाते हैं कि पुरूष के साथ–साथ नारी भी नारी का शोषण करती हैं। **'काले कारनामे'** में मनोहर की माता के कथन में मध्ययुगीन नारी की विवशता एवं दयनीय स्थिति साकार हो उठी है– ''हम एक मुद्दत से यह कसाले झेल रहें हैं। ..... . मुसलमानी जमाने से जो अपमान होते आयें हैं ..... वे बातें दुधारी तलवार हैं। ..... मजबूरी के सिवा मर्दों के हाथों उनके और भी जो अपमान होते हैं वे सैकड़ो बिच्छुओं के डंक मारने से ज्यादा जलन वाले और जहरीले हैं। मर्दों की आँख के नीचे उनके अपमान हुए हैं और मर्दों के हाथ–पैर नहीं चले।''[2]

निराला ने अपने उपन्यासों में एक ओर सामाजिक शोषण से ग्रस्त, परिस्थितियों के आगे विवश एवं अभिशप्त जीवन जीने को मजबूर नारी की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है तो दूसरी ओर सबल, समर्थ, प्रतिभा सम्पन्न एवं अपने चातुर्थ से परिस्थितियों को अनुकूल बना लेने का सामर्थ्य रखने वाली स्त्रियों का भी चित्रण किया है। **'अप्सरा'** की कनक अपनी चारित्रिक दृढ़ता, एकनिष्ठ प्रेम एवं निस्वार्थ सेवा भावना से राजकुमार जैसे व्यक्ति का दिल जीतने में समर्थ होती है।

**'अलका'** अपने बुद्धि चातुर्थ और विवेक से सबको चकित कर देती है। **'प्रभावती'** की नायिका प्रभावती एवं यमुना शौर्य एवं साहस की प्रतिमूर्ति हैं। **'निरूपमा'** की नायिका निरूपमा भी गाँव वालों की दुर्दशा जान कर शोषण का अंत करने में आगे आती है। इन नारी चरित्रों के माध्यम से निराला ऐसी नारी की परिकल्पना करते हैं जो विभिन्न मोर्चों पर संघर्ष करते हुए न सिर्फ सफलता व यश अर्जित करती है बल्कि देश, समाज व राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में सहायक होती है।

निराला तत्कालीन समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे तथा समाज के दलित एवं शोषित वर्ग की पीड़ा को समझकर निम्न वर्ग के प्रति अपनी सच्ची सहानुभूति प्रकट की है। अपने उपन्यास साहित्य में उन्होंने समाज में तथाकथित सभ्य माने जाने वाले उच्च वर्ग के लोगों तथा उनके मिथ्या जातीय दम्भ पर खुलकर प्रहार किया है। **'निरूपमा'** में कुमार की माता कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के मिथ्या दम्भ का शिकार है। ब्राह्मण होते हुए भी उचित नौकरी के अभाव में कुमार द्वारा जूते पॉलिश का पेशा अपनाने पर उसकी माँ को गाँव छोड़ने पर विवश किया जाता है। **'बिल्लेसुर बकरिहा'** का बिल्लेसुर एक ओर तो जातीय दम्भ को तिलांजलि देकर बकरी पालन का पेशा अपनाता है, दूसरी ओर विवाह के मामले में वह कनौजिया ब्राह्मणों की बीघे–बिस्वे वाली कुरीति से ग्रस्त है। **"चोटी की पकड़'** के जमादार जयशंकर के इस जातीय पाखण्ड पर मुन्ना दासी करारा व्यंग्य करती हैं– "तुम हमें चूमोगे, इससे कुछ नहीं होगा, पर हम तुम्हें चूमेंगे, इससे तुम्हारा धर्म जाता रहेगा। कोई चूमना ऐसा भी है जिसमें दोनों के होठ न मिलें।"[3] **'काले कारनामें'** भी द्विजों के ऐसे ही कारनामों से भरा पड़ा है। काशी के ब्राह्मणों द्वारा शूद्रों के संस्कृत पढ़ने का विरोध इस वर्ग के पाखण्ड की कलई खोलता है। **'चमेली'** के पं0 शिवदत्त राम त्रिपाठी एक ओर घण्टों पूजा–पाठ का आडम्बर रचकर गाँव के भोले–भाले निम्न वर्ग के लोगों पर अपना प्रभाव जमाते हैं वहीं दूसरी ओर अपनी विधवा बहू से नाजायज सम्बन्ध रखते हैं। उनकी मान्यता है– "कोई कुछ करें, दोख नहीं, धर्म न छोड़े।"[4] निराला ने जहाँ एक ओर समाज में फैली इन सम–विषम समस्याओं के यथार्थ चित्र उपस्थित किए हैं वहीं उनके उपन्यासों में जातीय जागरण के स्पष्ट चित्र भी परिलक्षित होते हैं। **'काले कारनामें'** में संस्कृत पढ़ने के प्रति शूद्रों की जिज्ञासा, **'कुल्लीभाट'** के कुल्ली द्वारा गर्हित जीवन त्याग कर लोक सेवा की ओर सक्रियता, **'चतुरी चमार'** में चतुरी का अपने पुत्र को शिक्षा देने के लिए स्वयं निराला से किया गया आग्रह आदि चित्र स्पष्ट संकेत हैं कि तत्कालीन समाज में धीरे–धीरे जागरूकता आ रही थी लेकिन "वह एक ऐसे जाल में फंसा है, जिसे वह काटना चाहता है, भीतर से उसका पूरा जोर उमड़ रहा है, पर एक कमजोरी है जिसमें बार–बार उलझकर रह जाता है।"[5]

निराला जिस युग में साहित्यिक लेखन कर रहे थे वह राजनीतिक पराधीनता का युग था। विभिन्न आन्दोलनों की असफलता, सामाजिक क्रूर मान्याताओं के निर्मम प्रहार, आर्थिक पराभव का आधिपत्य एवं दमन व शोषण का ताण्डव नृत्य कथाकार ने स्वयं देखा व भोगा था। सन् 1929 से 1932 तक का समय निराला के लिए घोर आर्थिक संघर्ष का युग था। निराला का स्पष्ट मत था कि आर्थिक वैषम्य ही समाज में होने वाले समस्त संघर्षों का मूल है। अर्थ प्रधान युग में मनुष्य को उसकी आर्थिक स्थिति से ही आंका जाता है। इस दृष्टि से हमारा समाज धनिक एवं निर्धन दो वर्गों

में विभक्त है, जिनके बीच की खाई को पाटना आसान काम नहीं। निराला के उपन्यासों में शोषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले पूँजीपतियों, सामन्तों, जमींदारों के अत्याचारों एवं अमानवीय कृत्यों का नग्न चित्रण मिलता है। **'अलका'** उपन्यास में महासमर के पश्चात् फैली महामारी, दरिद्रता एवं दुराचार का चित्र दिल दहला देने वाला है। गाँव के गरीब किसानों, मजदूरों एवं असहाय युवतियों की विवशता का लाभ उठाकर उनका दैहिक एवं मानसिक शोषण तत्कालीन समाज में कोढ़ की तरह व्याप्त था। समाज के शोषित वर्ग की पीड़ा का चित्र इन पंक्तियों में देखा जा सकता है– ''एड़ी–चोटी का पसीना एक करके, मुश्किल से भर–पेट खाने को पाता है। लगान चुकाता है। भिक्षुक को भीख देता है और फसल न होने पर जमींदार के कोड़े सहता है। कभी–कभी उन्हीं की कृपा से कचेहरी जा बैरिस्टर साहब को भी कुछ दे आता है। जमींदार, पुलिस, कचेहर, समाज, सभी जगह वह नीच, अधम, मनुष्य की पदवी से रहित, ठोकरे खाने वाला है। कोई देख न ले और रोने का मतलब और–और न सोचे इसलिए खुलकर नहीं रोता।''[6]

**'निरूपमा'** का कुमार उच्च शिक्षित होने के बावजूद योग्यतानुरूप पढ़ नहीं पाता। हमारी खोखली अर्थ व्यवस्था का ही परिणाम है कि एक ओर यामिनीहरण जैसे अयोग्य व्यक्ति अपनी पहुँच के जरिए विश्वविद्यालय में नौकरी पा लेते हैं वहीं लंदन से डी0लिट्0 कुमार को सड़कों पर बूट–पालिश करनी पड़ती है। इस सम्बन्ध में यामिनी के रूप में मानों कथाकार स्वयं अपने विचार रखता है– ''परिस्थिति मजबूर करती है तब बुरे–भले का ज्ञान नहीं रहता–जो काम सामने आता है, इंसान अख्तियार करता है क्योंकि पेटवाली मार सबसे बड़ी मार है।''[7] जमींदारों का शोषण सहने को मजबूर कृषक वर्ग की विवशता का चित्रण भी कथाकार ने अत्यंत प्रभावशाली रूप में किया है– ''जमींदार के इशारे पर न चलें तो गाँव में महीने भर गुजर न हो, ताजीरात हिन्द के किसी दफे का शिकार हों और जेल की हवा खायें।''[8] आर्थिक विभीषिका का चरम रूप निराला की **'राजा साहब को ठेंगा दिखाया'**, **'देवी'**, **'चतुरी चमार'**, **'दो दाने'** कहानियों में दिखाई पड़ता है। समग्रता में कहा जा सकता है कि देश के आर्थिक ढाँचें को खोखला करने वाले पूँजीपति, सामंत एवं जमींदारों के प्रति विद्रोह का प्रबल स्वर निराला के कथा साहित्य में मुखरित हुआ है।

निराला जिस युग में कथा साहित्य का प्रणयन कर रहे थे, वह स्वाधीनता प्राप्ति के लिए चलाए गए विभिन्न आन्दोलनों का युग था। स्वाधीनता आन्दोलनों ने भारतवासियों को जो राजनीतिक चिन्तन प्रदान किया उससे प्रत्येक नागरिक राजनीतिक दृष्टि से जागरूक हो उठा था। निराला जैसे साहित्यकार भी इससे अछूते नहीं रहे। उनके उपन्यास साहित्य में राजनीतिक चेतना के विविध पक्ष उद्घटित हुए हैं। स्वाधीनता आन्दोलनों की झांकी के साथ–साथ स्वाधीन भारत की विभिन्न राजनीतिक समस्याएँ एवं उनके विविध पहलू निराला के उपन्यास साहित्य में देखे जा सकते हैं। **'अप्सारा'**, **'अलका'**, **'चोटी की पकड़'**, **'काले कारनामें'** में उस युग की राजनीति का जीवन्त चित्रण मिलता है। **'अप्सरा'** में बंगाल के क्रान्तिकारियों की गतिविधियों का उल्लेख किया गया है। ''बंगाल में देशभक्ति का स्वरूप क्या था, किस प्रकार अंग्रेजों के विरूद्ध भारतीय दृढ़ता के साथ संगठित हो रहे थे और किस प्रकार मदान्ध सरकारी अफसरों को देशभक्त युवक सबक सिखाते थे, यह भी

'अप्सरा' की कहानी के माध्यम से निराला जी ने दिखाया है। **'चोटी की पकड़'** में बंग–भंग आन्दोलन के साथ–साथ विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी के प्रचार का नारा बुलन्द किया गया है। ''देश में विदेशी व्यापारियों के कारण अपना व्यवसाय नहीं रह गया। हम उन्हीं के दिए कपड़े से अपनी लाज ढकते हैं, उन्हीं के आइने से मुँह देखते हैं, उन्हीं के सेंट, पाउडर, लेवेन्डर, क्रीम लगाते हैं, उन्हीं के जूते पहनते हैं, उन्हीं की दियासलाई से आग जलाते हैं। ब्राह्मण की आग गयी, क्षत्रिय का वीर्य गया, वैश्य का व्यापार चौपट हुआ। यह सब हमको लेना है। उसी के रास्ते हम हैं। बंग–भंग एक उपलक्ष्य यह है।..... यह स्वदेशी वाला भाव हमको घर–घर फैलाना है।''[10] **'अलका'** उपन्यास के स्नेहशंकर के चरित्र के माध्यम से निराला ने अपनी राजनीतिक विचारधारा को वाणी दी है। स्नेहशंकर मानो कथाकार के विचारों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं, उन्हीं के सिद्धांतों को वाणी देते हैं। नेताओं की स्वार्थपरता एवं पद लिप्सा के प्रति निराला चिन्तित थे। वे मानते थे कि पूर्णतः योग्यता–सम्पन्न विविध विषयों का ज्ञाता एवं अनुभवी व्यक्ति ही नेतृत्व की क्षमता रखता है। नेता सम्बन्धी उनके विचारों का प्रतिपादन **'अलका'** उपन्यास में हुआ है– ''इसीलिए नेता मनुष्य नहीं, सभी विषयों की संकलित ज्ञान राशि का भाव नेता है। इसीलिए किसी भी तरफ का भरा–पूरा मनुष्य दूसरे किसी भी तरफ के खड़े मनुष्य की बराबरी कर सकता है पर देश में यह बात नहीं हो रही।''[11] निराला ने एक सजग लेखक की भाँति साम्प्रदायिकता की विकरालता को पहचाना, उन्होंने हिन्दु–मुस्लिम समस्या पर गम्भीरता से विचार करते हुए इसके दुष्परिणामों की ओर संकेत किया है। उनके उपन्यास साहित्य में यत्र–तत्र इस समस्या के विविध पक्षों का उद्घाटन किया गया है। इस तरह निराला ने अपने कथा–साहित्य में राजनीतिक, स्वार्थपरता, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता पर कठोर प्रहार किए एवं मानवतावादी मूल्यों के प्रति गहरी आस्था प्रकट की।

भारतीय चिन्तनधारा में सांस्कृतिक चिंतन को विशेष महत्व प्राप्त है। सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों को भी सांस्कृतिक दृष्टि से मुक्त कर उसे उच्च धरातल पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास भारतीय चिन्तन की विशेषता है। ''संस्कृतिविहीन राजनीति या संस्कृतिरहित सामाजिकता हमारे देश में उच्च स्तर पर प्रतिष्ठित नहीं हो सकती।''[12] आधुनिक काल में पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण जहाँ एक ओर हमारी सभ्यता और संस्कृति बुरी तरह प्रभावित हुई वहीं दूसरी ओर धर्म के परम्परागत स्वरूप में भी काफी परिवर्तन आया। कर्म को ही धर्म मानने की प्राचीन अवधारणा के कारण आज धर्म मनुष्य को कर्मक्षेत्र में प्रवृत्त करने वाला प्रेरक तत्व बन गया है। इसी तरह अंधविश्वास, आडम्बर, अनास्था तथा रूढ़ियों के विरूद्ध का स्वर मुखर करने में भी धर्म और संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय संस्कृति, धर्म, एवं दर्शन के प्रति निराला की आस्था अडिग थी। वे रामकृष्ण मिशन एवं स्वामी विवेकानन्द से प्रभावित थे। जीवन के तमाम संघर्ष एवं विरोधों के बीच निराला के व्यक्तित्व को दार्शनिक आधार समन्वय–काल में रामकृष्ण मिशन ने दिया। ''रामकृष्ण परमहंस की भाव साधना और विवेकानन्द का वेदान्ती अद्वैतवाद दोनों मिलकर मानों निराला में एकाकार हो गए हों।''[13]

ईश्वरीय शक्ति एवं आध्यात्मिक साधना पर निराला की जो अटूट आस्था थी वह उनके उपन्यासों एवं कहानियों में यत्र–तत्र परिलक्षित होती है। भक्ति के सम्बन्ध

में निराला का स्पष्ट विचार था कि ''भक्ति बुद्धि नहीं, पर पूजा चाहती है। पूजा के लिए सामग्री एकत्र करने की विधि वह नहीं बताती, विधि आप विधान देते हैं।''[14] आध्यात्मिक संस्कारों से सम्पन्न होते हुए भी निराला पाखण्ड के विरोधी थे। मंत्र–तंत्र पर उन्हें विश्वास न था। अंधविश्वास एवं धार्मिक विकृतियों के वे कट्टर विरोधी थे। समाज में विष की भाँति फैली छुआछूत, ऊँच–नीच एवं जाति–पाति की प्रथा को वे जड़ से मिटाना चाहते थे। अपने उपन्यासों में विभिन्न पात्रों एवं चरित्रों के माध्यम से उन्होंने इस धार्मिक पाखंड का विरोध किया। **'कुल्लीभाट'** में तमाम सामाजिक रूढ़ियों का बहिष्कार करते हुए स्वयं कथाकार कुल्ली का एकादशाह सम्पन्न कराते हैं। इसी तरह **'चतुरी चमार'** में ब्राह्मण समाज का कोप भाजन बनते हुए भी चतुरी–पुत्र अजुर्नवा को पढ़ाना स्वीकार करते हैं। इस प्रकार रूढ़ परम्पराओं का विरोध करते हुए निराला भारतीय संस्कृति के सकारात्मक मूल्यों की स्थापना करना चाहते हैं। जीवन की विषम परिस्थितियों में भी आस्था, जिजीविषा एवं मानवतावादी स्वरों का उद्घोष निराला के उपन्यासों व कहानियों में किया गया है। तमाम संघर्ष झेलते हुए भी जीवन संग्राम में अपराजेय योद्धा की भाँति डटे रहने की बिल्लेसुर बकरिहा की जिजीविषा सराहनीय है। जीवन की गर्हित स्थितियों से ऊपर उठकर कुल्लीभाट द्वारा मानवता एवं लोक सेवा के प्रति समर्पण भाव वस्तुतः कथाकार की मानवतावादी आस्थापरक दृष्टि का परिचायक है।

निराला के उपन्यास साहित्य के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि वे समाज की रूढ़िवादी मान्यताओं के विरूद्ध एक नए समाज की स्थापना करना चाहते थे। अपने युग की तमाम राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों के विभिन्न परिदृश्यों को अपने उपन्यास साहित्य में जीवन्त रूप में चित्रित करने के साथ ही उन्होंने न सिर्फ युगीन समस्याओं का आंकलन किया है बल्कि मौलिक उद्भावनाओं द्वारा परिवर्तन का आह्वान भी करते हैं। मानवतावादी की प्रतिष्ठा निराला के सम्पूर्ण कथा–साहित्य का प्रतिपाद्य है। वे मनुष्य का चित्रण मनुष्य के रूप में ही करते हैं जिसमें देवत्व एवं दानत्व दोनों का समावेश है। समाज में दलित समझे जाने वाले मनुष्यों में मानवता का अप्रतिम तेज निराला ही देख पाते हैं। यह उनका मानवतावादी दृष्टिकोण ही है जो दलितों के प्रति सहानुभूति दिखाकर उनके उन्नयन का प्रयास करता है। जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता के सुदृढ़ प्राचीरों को ध्वस्त करने में प्रयासरत निराला भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी की भाँति सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा एवं प्रतिस्थापना के प्रति भी सचेष्ट दिखाई देते हैं।

सन् 1930 के पश्चात् हिन्दी साहित्य में एक व्यापक बुनियादी परिवर्तन होता है जिसकी दिशा यथार्थवाद की ओर थी। यह परम्परा जनवादी यथार्थ की ही थी जो एक ओर साम्राज्यवादी उत्पीड़न का विरोध करती है तो दूसरी ओर सामंती उत्पीड़न का भी तथा इसमें उन मुद्दो पर विशेष बल दिया गया जिनकी टक्कर सीधे जनसाधारण से थी जैसे किसान और जमींदार, वर्ण व्यवस्था के भीतर पिसते अछूत, धार्मिक ठेकेदारों की दुरभि–संधि के बीच सिसकती नारी तथा राजनीतिक हथकण्डो से छली जाने वाली सामन्य जनता। निराला का समूचा उपन्यास साहित्य इसी बढ़ती हुई जनवादी विचारधारा का दस्तावेज है जिसमें स्वतंत्रता पूर्व किए जाने वाले संघर्षों का चित्रण तो है, साथ ही स्वातंत्र्योत्तर भारत में हिन्दी जाति की करूण व्यथा भी अंकित है।

## सन्दर्भ


1. अलका – निराला रचनावली, तृतीय खंड, पृष्ठ 150
2. काले कारनामे – निराला रचनावली, चतुर्थ खंड, पृष्ठ 217
3. चोटी की पकड़ – निराला रचनावली, चतुर्थ खंड, पृष्ठ 141
4. चमेली – निराला रचनावली, चतुर्थ खंड, पृष्ठ 258
5. चतुरी चमार – निराला रचनावली, चतुर्थ खंड, पृष्ठ 365
6. अलका – निराला रचनावली, तृतीय खंड, पृष्ठ 152
7. निरूपमा – निराला रचनावली, तृतीय खंड, पृष्ठ 352
8. काले कारनामे – निराला रचनावली, चतुर्थ खंड, पृष्ठ 225
9. निराला की साहित्य साधना – डा0 विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, पृष्ठ 231
10. चोटी की पकड़ – निराला रचनावली, चतुर्थ खंड, पृष्ठ 204
11. अलका – निराला रचनावली, तृतीय खंड, पृष्ठ 152
12. उपन्यासकार अमृतलाल नागर : व्यतित्व और कृतित्व – डा0 प्रेमशंकर त्रिपाठी (अप्रकाशित शोध प्रबंध, पृष्ठ 319)।
13. निराला : काव्य और व्यक्तित्व – प्रो0 धनंजय वर्मा, पृष्ठ 50
14. भक्ति और भगवान – निराला रचनावली, चतुर्थ खंड, पृष्ठ 380